B. A. History Hon's Part: II
Paper: III, Unit: IV (d), Date: 10.11.2020 Lecture No. 10

Lession: सल्तनत काल में व्यापार एवं उद्योग

सल्तनतकाल में हस्तशिल्प पर आधारित उद्योगों की प्रगति विवेकशील तरीके से हुई। खनिज पदार्थों की प्राप्ति का काम निष्ठापूर्वक रूप से हुआ करता था। नमक लोहा, ताम्बा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे परन्तु सोने और चाँदी की मात्रा कम थी। हीरे और बहुमूल्य रत्नों का कारोबार आम था। वस्त्र उद्योग की स्थिति तुर्कों द्वारा चरखे के प्रचार से उन्नति हुई। 'पट' अथवा मोटे सूती वस्त्र से लेकर उत्तम कोटि की मलमल का उत्पादन होता था। रेशमी वस्त्र और सुनहले कामवाले पटोला वस्त्र गुजरात में निर्मित होते थे। रेशम की उच्च कोटि के वस्त्र ईरान से आयात किए जाते थे। कालीनों का भी आयात ईरान और अफगानिस्तान से होता था, जबकि शाल कश्मीर से प्राप्त की जाती थी। दिल्ली के सुल्तानों ने अनेक भवनों का निर्माण कराया।

सल्तनतकाल के व्यापारियों के द्वारा विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करने तथा कार्यों के आधार पर विभाजित किया गया है। उदाहरण स्वरूप बड़े व्यापारी को 'सुल्तानिमान' तथा समस्त वैश्य व्यापारियों को 'बक्काल' कहा जाता था। अधिकांश को 'शाहान' तथा खुदरा व्यापारियों को 'बाजारियान' कहा जाता था। व्यापारी अनाज का व्यापार करते थे जो कि मुख्यतः हिन्दू होते थे। व्यापारी समुदाय में दलालों का भी विशेष स्थान था। ये लोग क्रेता तथा विक्रेता दोनों का काम लेते थे। समकालीन ऐतिहासिक स्रोतों से अवगत होता है कि अपनी निजी आय को बढ़ाने के लिए सुल्तान भी व्यापार करने लगे थे। सुल्तान इल्तुतमिश, दासों का व्यापार किया करते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने अपना धन व्यापारियों को देकर उनसे विविध वस्तुएँ मँगाई तथा स्वयं अपने निर्धारित मूल्यों पर बेचकर अपना राजकोष सोने की मुद्राओं से भर लिया था। सुल्तान फिरोजशाह तुगलक 'आईन-ए-सल्तनत' की सहायता से दासों का व्यापार करता था। अलाउद्दीन खिलजी ने 'सराए-अदल' बनवाई। उसने आदेश दिया कि जो कपड़ा दिल्ली या देश-विदेश से लाया जाए उसे सरकारी भाव पर बेचा जाए। उस कपड़े को भी घर या बाजार में ले जाने से पहले 'सराय-अदल' लाया जाय। बरनी के अनुसार व्यापारी वर्ग उस कपड़े के सरकारी भाव से भी अधिक मूल्य मिलने की आशा होने पर चोरबाजारी भी करते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों, दासों और चौपायों का मूल्य सस्ता करने के लिए कई स्थायी नियम बनाये उसने गुप्तचर नियुक्त किया।

सल्तनतकाल में व्यापारियों के विभिन्न प्रकार के कर वसूल जाते थे। 'फतुहात-ए-फिरोजशाही' के अनुसार व्यापारियों से 36 तरह के लिए जाते थे, उनमें से 9 कर तो प्रत्यक्ष रूप से व्यापारियों से तथा शेष अन्य दुकानदार व बाजारियों से वसूले जाते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने मदिरा निषेध सम्बन्धी नियम कठोरता से लागू किए, जिससे अनेक व्यापारियों को हानि उठानी पड़ी। परिणामस्वरूप दुकानदारों, व्यापारियों, काश्तकारों, साहूकारों, सरीफों, ऋणदाताओं, चोरबाजारी करनेवालों की धन उगाही, माल और अनाज लाखों को पार करके करोड़ों तक पहुँच गया। व्यापारी वर्ग के प्रति प्रशासन की नीति का एक और महत्वपूर्ण पहलू भी था कि इस काल के प्रशासन व्यापारियों को व्यापार के लिए अग्रिम धन या ऋण देने लगा।

सल्तनतकालीन सुल्तानों की यह नीति थी कि जहाँ तक हो सके व्यापारी

समुदाय का प्रश्रय व संरक्षण दिया जाय, व्यापारियों की सुरक्षा के लिए विशेष व्यवस्था भी तथा उनके रहने के लिए नए-नए मुहल्ले बसाए गए। उनकी सुरक्षा के लिए खुत और मुकद्दम नियुक्त किए गए। संक्षेप में कह सकते हैं कि पूर्व मध्यकाल में व्यापारी समुदाय की दशा बहुत अच्छी थी और उसने अपनी बड़ी उन्नति कर ली थी। व्यापारी वर्ग कभी-कभी जमाखोरी, चोरबाजारी वस्तुओं का कृत्रिम अभाव उत्पन्न करने, वस्तुओं के अकारण मूल्य बढ़ाने या कृत्रिम सिक्के ढालने या क्रेता-विक्रेता के कमीशन लिया जाता, तो उन्हें दण्ड दिया जाता था। उदाहरणस्वरूप अलाउद्दीन खिलजी के समय में यदि कोई दुकानदार कम तौलता था तो तोले के वजन का मांस उसके शरीर के काट लिया जाता था। इस काल में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय से सभी नगरों और शहरों का मुख्य व्यापार हिन्दुस्तानी व्यापारियों के ही हाथों में रहा।

व्यापार तथा विनिमय: सल्तनतकाल में, इस देश में निर्मित घरेलू वस्तुओं की खपत और मांग केवल अपने देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी थी। इस प्रकार विभिन्न वस्तुओं की खपत आदि व्यापार उत्पन्न अवस्था में था, वहां कृषि और निर्यात भी किया जाता था। उल्लेखनीय तथ्य है कि "उच्च वर्ग की विलासिता के सामान के अतिरिक्त बहुमूल्य घोड़ों और खच्चरों तथा दासों का आयात भी किया जाता था।" सुल्तान आयात का मुख्य केन्द्र था। सुल्तान के बाद घोड़ों का आयात करने का इसका बड़ा बाजार दिल्ली था। घोड़ों का व्यापार जल और थल दोनों मार्गों से होता था। इस काल में निर्यात भी जल तथा थल दोनों मार्गों से होता था। इस समय भारतीय माल की विदेशों में बड़ी खपत थी। सिन्ध में देवल, गुजरात के खम्भात, मलाबार बहमनी राज्य के थाना, इत्यादि स्थानों से निर्यात का कार्य होता था। थल मार्ग से भारतवर्ष मध्य एशिया, अफगानिस्तान, ईरान, मुल्तान आदि मार्गों से जुड़ा हुआ था। बहुमूल्य रत्न, पुखराज, इत्र, जानवर, मसाले, चाय, चीनी, और आबनूस, साल, चन्दन की लकड़ी इत्यादि वस्तुओं का निर्यात होता था। जरी के कपड़े, मलमल, सूत तथा काली मिर्च इत्यादि भी निर्यात वस्तुओं में थी। वस्तुओं का मूल्य उनके बाजार पर निर्भर करता था, गौर उत्पादन, अकाल, यातायात की सुविधा व्यापारियों की रक्षा तथा उनकी मांगें इत्यादि। वस्तुओं का मूल्यनिर्धारण करने के लिए उलेमा एवं प्रमुख विभाग 'दिवाने-ए-मुमालिक वा-खैरातखाने' की स्थापना की गई थी कि जमाखोर तथा नियम तोड़नेवाले व्यापारियों को कठोर दण्ड देना था। इस काल में मुद्रा सिक्के तुगलक के समय में वस्तुओं का दाम अधिक थे। इस प्रकार 15वीं शताब्दी के अन्त तक व्यापार एवं विनिमय की दृष्टि से भारतवर्ष अत्यन्त समृद्धिशाली रहा तथा व्यापार एवं उद्योग का भलीभाँति फूला-फला रहा।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जामनगर